सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• नरेन्द्रपाल जैन

सृजक-सृजन-समीक्षा

नरेंद्रपाल जैन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,
इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**
आवरण: **मृदुल जोशी**
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

नरेंद्रपाल जैन का परिचय

नाम- नरेंद्रपाल जैन

जन्म स्थान- ऋषभदेव, जिला उदयपुर (राज.)

शिक्षा- स्नातक

कार्यक्षेत्र - डूंगरपुर

सामाजिक क्षेत्र- ऋषभदेव

विधा- गीत, ग़ज़ल, कविता, मुक्तक, क्षणिकाएँ, छंदबद्ध एवम् छंद मुक्त।

प्रकाशन- तीन पुस्तिकाएँ-

1-मन्थन... एक सोच (पद्य एवम् आलेख)

2- मनोभाव - पद्य

3- गागर- पद्य

चौथी पुस्तक- प्रकाशन की तैयारी।

सम्मान व अन्य उपलब्धियां

*साहित्यिक यात्रा गत 20 वर्षों से।

*अब तक 1000 से अधिक रचनाएँ।

*समय-समय पर पत्रिकाएं/पुस्तकों में रचनाएँ आलेख प्रकाशित।

*समसामयिक आलेख प्रकाशित।

*विश्व हिंदी साहित्य संगठन (कनाडा) द्वारा सम्मानित।

*"कविकुल भूषण" से सम्मानित।

*प्रशासन द्वारा "श्रेष्ठ साहित्यकार" से सम्मानित।
*रोटरी क्लब, लायन्स क्लब, महावीर इंटरनेशनल और अन्य संस्थाओं द्वारा विभिन्न साहित्यि के क्षेत्र में सम्मान।
*पर्यावरण, पृथ्वी, जल संरक्षण सम्बन्धी रचित जागृति दोहे विभिन्न विद्यालयों में बच्चों को पढ़वाये जा रहे हैं।
*साहित्यिक मंचों के साथ कवि सम्मेलनों में मंचों पर भी निरन्तर सहभागिता एवम् मंच संचलान।
*शब्द साधना परिवार द्वारा- चक्रवर्ती साहित्य सम्राट सम्मान।
*साहित्य और सामाजिकता में वर्ष2017 का "युवारत्न" पुरस्कार मुंबई में।
*साहित्य का क्षेत्र में उपलब्धियों हेतु "युवा प्रतिभा पुरस्कार" एवम् आदर्श युवा सम्मान बेंगलोर में। 28.10.2017

आत्मकथ्य

शब्दों की साधन में प्रयासरत "अंतरा शब्द शक्ति" में कभी अंतराल नहीं आया। यह समूह शब्दों की सीढियां अनवरत चढ़ता गया। आज इस ऊँचाई पर पहुँचकर हम नीचे देखते हैं तो अतीत की पाठशाला दिखाई पड़ती है, जहाँ हम कभी तलहटी में थे। आज अंतरा शब्द शक्ति स्वयं गिरी श्रृंग बन गया है। इसकी नींव मनोज जी जैन और प्रीती जी सुराना ने डाली थी। उनके परिश्रम से आज एक-एक मजबूत पत्थर जुड़कर साहित्य का सफल अटल पूजनीय "गोवर्धन" बन गया है।
इस हेतु मनोज जी, प्रीती जी और समूह के प्रत्येक शब्द साधक को बधाइयां और शुभकामनाएं देता हूँ।

नरेंद्रपाल जैन

"सृजक का सृजन"

सरगम

दिलों का है जहां लेकिन यहाँ धड़कन नहीं मिलती,
थके हैं साज जीवन के यहाँ सरगम नहीं मिलती।

दिखा दो ज़ख्म तुम चाहे ज़माने भर के लोगों को,
नमक वालों की बस्ती है यहां मरहम नहीं मिलती।

अमावस राज करती है जकड़ कर चाँद को नभ में,
ये वसीयत हैं अँधेरों की यहाँ पूनम नहीं मिलती।

दिखावट के बाज़ारों में बनावट खूब बिकती है,
छुपाकर चेहरा रोते पर ये आँखें नम नहीं मिलती ।

परेशां है बहुत हैरां कि मज़हब खूब रोता है,
उलझते पन्थ की राहें कभी सुलझन नहीं मिलती।

दिया है बादलों को जल यहां हमने उधारी में,
मगर बारिश की धाराएं हमें हरदम नहीं मिलती।

वक्त

गम की हवाओं में सदा ही मुस्कुराना चाहिए,
हो वक्त कैसा भी हमें वो आजमाना चाहिए।

सारे जहां की पा के दौलत साथ क्या ले जाएंगे,
माँबाप के आशीष का हमको खजाना चाहिये।-

क्यों जल रहे उनकी हँसी से दूसरों को जो मिली,
उनकी खुशी की बारिशों में भीग जाना चाहिये।

देखो कभी ना हो निगाहें लक्ष्य से भटकी हुई,
जो आँख को ही भेद डाले वो निशाना चाहिये।

जागीर नहीं दौलत नहीं माँ भारती है मांगती,
जो जान की बाज़ी लगा दे वो दीवाना चाहिये।

करवट

बादलों में ले के करवट चाँदनी तो कीजिए।
ढूंढ लेंगे आपको हम रोशनी तो कीजिए।

लोग कहते हैं ज़मीं पर बादलोंसी आपको-,
प्यार का गुलज़ार सूखा कुछ नमी तो कीजिए।

अब हमें करनी पड़ेगी और कितनी बन्दगी,
आपकी इस बेरुखी में कुछ कमी तो कीजिए।

बिन खता के दर्द देता आपका यूँ रूठना,
मुस्कुराकर बात कोई लाज़मी तो कीजिए।

क्या हमारी भूल है या क्या नये शिकवे हुए,
इन सवालों के जवाबों को सही तो कीजिये।

जब गंगा बनकर आओगी

जब गंगा बनकर आओगी
तुमको मस्तक पर धर लूँगा,
अपने कर्मों को धोधो कर-
फिर तुमको मैली कर दूँगा।

जब अंतस् में मन्थन होता
भावों का वेग ही रहता है,
अमृत सारा खारा होकर
आँखों से गरल ही बहता है,
जब मीरा बनकर आओगी,
फूलों संग मैं विषधर दूँगा,
फिर जीवन पल के प्यालों में
वो गरल तुम्हारे भर दूँगा।

तुम भाग्य अधीन होकर के भी,
रेखाएं मिटा न पाओगी,
होनीअनहोनी साथ लिए-
तुम स्वयं के वर को रचाओगी।
जब सीता बनकर आओगी
सिंहासन अर्पित कर दूँगा,
फिर देकर के वनवास तुम्हें
जीवन सुख सारे हर लूँगा।

अम्बर जब सूनी ललाट लिए
सूरज की बिंदी लगाएगा,
फिर रातों का अँधियारा तब
श्रृंगार तुम्हारा मिटाएगा।
जब तुम आओगी अहिल्या बन
मैं प्रेमपाश में बाँधूंगा,
फिर अभिशापित करके तुमको
पत्थर का बनाकर रख दूंगा।

मैं जीवन प्रीत को भर जी लूँ
तुम्हारे बिना संभव ही नहीं,
निष्फल होंगे ये कर्म मेरे,
उद्धारित हो ये भव ही नहीं।
तुम राधा बनकर आओगी,
मन तुमको मेरा दे दूंगा,
पर परिणय सूत्र कहीं बंधकर
स्मृतियां सारी ले लूंगा।

रे कबीरा ! मन है अधीर

रोजे, अजाने और नमाज़ें
मन्त्र, चालीसा, आरती
होड़ चली है इनमें देखो
संवेदनायें मारती।
चले विषैले तीर
रे कबीरमन है अधीर !

पत्थर की चोटों को जग में
काँटों से सहलाते हैं,
पापनाशिनी गंगा से अब
वे हाला नहलाते हैं।
धर्म दिया है चीर।
रे कबीरमन है अधीर । !

कदमों को छूकर भी ठोकर
सहनशील है बनी हुई,
आँखों ने पानी रोका है
मन की बदली घनी हुई।
गूंगी हो गयी पीर।
रे कबीर मन है !अधीर।

कोयले का हो रहा है
दूध से अभिषेक,
तन उजला करता है क्या
लाखों में कोई एक ?
काली हुई है खीर।
रे कबीरमन है अधीर । !

छल से अमृत पा कर वे
राहुकेतु बन बैठे-,
मानव ने मानवता खोई
कर साँपों का फन बैठे।
पिटते रहे लकीर।
रे कबीर मन है अधीर। !

अन्तस् के कोने

हाथों की रेखाओं के पथ
जीवन में प्रतिकूल हुए,
तब अन्तस् के कोने सिमटे
नयनों के आँसू शूल हुए।

जब मेरे नाम की चर्चा हुई
ग्रहनक्षत्रों की बस्ती में-,
उपहास भरे मुँह मोड़ गए
हँस हँसकर अपनी मस्ती-में।
जो मुझसे दूर रहा करते थे,
दिन उनके अनुकुल हुए।
तब अन्तस् के कोने सिमटे
नयनों के आँसू शूल हुए।

जब सम्बंधों की बात चली
परिभाषा बदली अपनों की,
आँखों से पलकें रूठ गयी
चादर नम हो गयी सपनों की।
कभी पाँवों में बिछ जाते थे
पथरीले वो फूल हुए,
तब अन्तस् के कोने सिमटे
नयनों के आँसू शूल हुए।

बस एक हमारी आहट से
घर चौखट उनके सजते थे,
मुस्कानों के दीपक लेकर
मन त्यौहारों से लरज़ते थे।
अब लगता जैसे हम उनके
जीवन की बड़ी भूल हुए।
तब अन्तस् के कोने सिमटे
नयनों के आँसू शूल हुए।

हमने कितने रिश्ते जोड़े
और हमने कितने तोड़े हैं,
जो प्रीत के पँछी पाले थे,
स्वार्थ ने उन्हें मरोड़े हैं।
कभी मस्तक पर जो चढ़ते थे,
कुमकुम के कण धूल हुए
तब अन्तस् के कोने सिमटे,
नयनों के आँसू शूल हुए।

"सृजन की समीक्षा"

1.

सप्ताह के केंद्रीय रचनाकार के रूप में श्री नरेंद्रपाल जी जैन का हार्दिक स्वागत हैं , शुभकामनायें स्वीकार करें । भगवान ऋषभदेव आये केसरिया जी के स्थान से आपका वास्ता आपके सृजन का मूल भाव बनकर प्रस्फुटित हो रहा है । 20 वर्षों की साहित्यिक यात्रा का अनुभव आपको साहित्य क्षेत्र में भी एक कुशल शिक्षक के समकक्ष खड़ा करता है । आपकी साहित्यिक उपलब्धियां एवं सम्मान आपका के सृजन एवं समर्पण का कद बता रहा है । गत 2 वर्षों से प्रतिदिन आपके अलग अलग विधाओं की रचनाओं को पढ़ते आ रहा हूँ । एक युवारचनाकार की सधी हुई कलम जब रचना करती है तो नव निर्माण की बात करती है ..आपकी सभी रचनाओं के भाव एवं शिल्प उत्कृष्ट रहें हैं ।

ग़ज़लों की ख़ासियत ही होती है कि चंद अशआरों में गहरी और असरदार तरीके से बात कह सके ..आपकी ग़ज़लें यह काम कर गयी । पहली एवं पांचवी ग़ज़ल ने मुझे प्रभावित किया।

कुछ अशआरों के मोती जो मैंने चुने -

गम की हवाओं में सदा ही मुस्कुराना चाहिए,
हो वक्त कैसा भी हमें वो आजमाना चाहिए।

#

लोग कहते हैं ज़मीं पर बादलों-सी आपको,
प्यार का गुलज़ार सूखा कुछ नमी तो कीजिए।

तुम गंगा बनकर आओगी..

रचना ने मेरे अंतस पर गहरा प्रभाव छोड़ा है । प्रेम के दिखावे में छिपे छल को असरदार तरीके से उभारा है ..या यूं कहें पुरुष द्वारा स्त्री को स्वप्न दिखाना और अंत में परिस्थितिवश विवशता दिखा देने जैसे

कालजयी उदाहरणों के माध्यम से सशक्त प्रहार । शिखर का सृजन, **बधाई ।**

हे ! कबीर

उत्कृष्ट सृजन का एक और नमुना । साहित्य की असल सेवा यही है कि आप देश और समाज पर लिखे...वेदनायें जब काव्य गंगा में ढलती हैं तो प्रेरणा बनकर पाठकों का मन पवित्र कर देती है , शत प्रतिशत न सही ..सकारात्मक बदलाव की दिशा में एक उल्लेखनीय कदम होता है ।

अंतस के कोने

हाथों की रेखाओं के पथ,जीवन में प्रतिकूल हुए,
तब अन्तस् के कोने सिमटे नयनों के आँसू शूल हुए।

कवितायें कभी साहस देती है , प्रेरणा बनकर मार्ग प्रशस्त करती है तो कभी निराशा के घोर बादलों के बीच सहानुभूति की किरण भी दिखा देती है। अंतस के कोने प्रतिकूल समय में प्रतिकूल होते रिश्तों पर सटीक अभिव्यक्ति है ।

पढ़ने वाले को अपने दिल की बात कहती हुई प्रतीत होती रचना ।

आपके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामनाओं के साथ, पुनः **बधाई** ।

हेमंत बोर्डिया, इन्दौर

2.

आज सप्ताह के कवि के रूप में नरेंद्र जैन जी का हार्दिक स्वागत है ।

काफ़ी अरसे से लिखते रहें हैं नरेंद्र जी,

तो उनकी परिपक्वता,हर रचना में नज़र आती है ।

सम्मानों की लम्बी सूची अपनी कथा,आप कहती है । आत्मकथ्य एक सहृदय रचनाकार की बानगी है । खुदशनासी के इस दौर में , दूसरों को याद करना बड़ा दुर्लभ सा है ।

पहली दोनों गज़लें बेहद शानदार हुई ।
पहली गज़ल में मरहम के साथ लिंग भेद है ।
ये वसीयत है अँधेरों की बहुत ख़ूब शेर हुआ है ।
दूसरी गज़ल कुछ सार्वत्रिक सत्यों से वाबस्ता अश्आर हैं ।
3री रचना खूबसूरत **गज़ल प्रिय के प्रति उपालम्भ और शिकवों का सँसार, सृजक रचता है ।**
अगला गीत बेहद खूबसूरत बन पड़ा है ।
पुरूष प्रवृत्तियों का परत दर परत खुलता,
स्त्री के प्रति उसकी सोच और व्यवहार के दोगले मापदण्डों पर, तंज़ करता
खूबसूरत सृजन ।
रे कबीर ! मन है अधीर ,..कबीर के सहारे,
कबीर जैसी ही दो टूक बात ।
(पीटते) रहे लक़ीर सही शब्द होगा वैसे ।
अन्तस् के कोने बढ़िया गीत है,
कुछ कसावट की और दरक़ार है, तो बिम्ब विधान थोड़ी और सटीकता माँगते है ।
खूबसूरत सृजन से रूबरू कराने के लिए अंतरा का शुक्रिया ।
शुभकामनाएँ नरेंद्र जी को । जय हो विजय हो ।।

ब्रजेश शर्मा विफल , झाँसी

3.

कवि विशेषांक में प्रस्तुत आदरणीय नरेंद्रपाल जैन को बहुत बहुत **बधाई** आपका आत्मकथ्य आपकी लेखनी जैसी ही प्रभावी है। आपकी उपलब्धियाँ आपकी उत्कृष्ट रचनात्मक लेखन को दर्शाती है।
आपकी पहली रचना एक टूटे दिल के दर्द को महसूस कराती है और उनकी बेबसी को बखूबी दर्शाती है।

दूसरी रचना में आपने जीने के सही मायने को बताया एक सही लक्ष्य ही जीवन को सही अर्थ देता है।
तीसरी रचना नारी उत्पीड़न को दर्शाती और उनकी व्यथित मन को समझने की अनुभूति लिए उत्कृष्ट कविता है।
चौथी रचना रे कबीर!मन है अधीर, में कवि दुनियाँ के स्वार्थी तत्वों की परेशानियों को बहुत ही सही रूप में दर्शाया है।
पाँचवी रचना भी कवि के हृदय वेदना को दर्शाती है जहाँ वो अपने प्रियतम से बेरुखी कम कर के मुस्कान की अपेक्षा करता है।मानमनुहार की भावभूति से सजी यह रचना बहुत अच्छी है।
छठीं रचना अन्तस् के कोने कविता रिश्ते की कसौटी को बताती एक बहुत ही अच्छी कविता है।
अंत में नरेंद्र जैन जी को अनेकों शुभकामनाओं के साथ **बहुत बहुत बधाई।**

शुभ्रा झा (दरभंगा ,बिहार)

4.

श्रद्धेय श्री नरेंद्रपाल जी

सादर अभिवादन

अन्तरा शब्दशक्ति के गरिमामयी साहित्यिक समूह के साप्ताहिक कवि विशेषांक में आपका हार्दिक स्वागत और **अभिनंदन** है
आपको 20 वर्षों की सतत काव्य साधना में अनगिनत सम्मानो से देश में ही नही विदेशों में भी सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुवा...
1000 से अधिक रचनाओं का सृजन किया,
काव्य मंचों पर भी आपने प्रस्तुति दी...
मैं भी 30 वर्षों से कवि सम्मेलनों के छोटे बड़े आयोजन करवाता रहा हूँ...
आपसे अभी तक रूबरू मिलने और सुनने का सौभाग्य प्राप्त नही हुवा...
आगामी आयोजन में आपको जरूर आमन्त्रित करेंगे...
हिन्दी साहित्य को और अन्तरा परिवार को आप पर गर्व है...आपने इसका

श्रेय अन्तरा परिवार के मित्रों को देकर अपनी सहृदयता का परिचय दिया...

हम सभी गौरवान्वित है...

रचनाओं में सभी रचनाएँ श्रेष्ठ सृजन का प्रमाण है...

श्रेष्ठता का क्रम नही दिया जा सकता...

एक से बढ़कर एक रचनाओं की महक से पटल सुगंधित हो रहा है...

उज्ज्वल भविष्य की शुभमंगल कामनाओं के साथ बहुत बहुत बधाइयाँ...

अन्तरा शब्दशक्ति समूह के संचालक मंडल को धन्यवाद सहित आभार जिनके सद्प्रयासों से इतने श्रेष्ठ रचनाकार को रूबरू जानने का सौभाग्य प्राप्त हुवा...!

इति शुभम्....

कैलाश बिहारी सिंघल

5.

आज के केंद्रीय रचनाकार विशेषांक में प्रस्तुत श्री नरेन्द्रपाल जैन जी का **हार्दिक अभिनन्दन,**..

आपका संक्षिप्त परिचय, प्रकाशन और सम्मान तथा उपलब्धियाँ, आत्मकथ्य सम्मोहित कर रहा है। आपने बिल्कुल सही कहा है कि अंतरा शब्द शक्ति, आज एक "गोवर्धन" पर्वत बन गया है। हर एक पत्थर जुड़कर इस पर्वत से विशेष बन गया है।

आपकी सारी रचनाएँ बेहद उम्दा हैं, पहली रचना में एक एक शब्द बेहतरीन है, दिखावटी दुनिया, मज़हब की उलझनें, मतलबी ज़माने की हकीकत दिखाई है। दूसरी रचना लाजवाब है, खुशी और ग़म में एक समान रहना, माँ बाप का आशीष लेना, लक्ष्य को हासिल करना, और माँ भारती के लिए कुर्बान होने की सीख देती है यह रचना।

तीसरी रचना मानव के स्वार्थी गुण से अवगत करा रही है कि पुरुष मानता तो है कि हर नारी पूजनीय है, किन्तु उसका सारा विवेक शून्य हो

जाता है और वह तरह तरह से उपभोग करता है, अत्याचार करता है, उसे पता होता है कि नारी के बिना जीवन संभव नहीं है फिर भी उसे अपमानित करता है।

चौथी रचना , रे कबीर ! मन है अधीर! , धर्म और सामाजिक अनुष्ठानों की आड़ में हो रही राजनीति और स्वार्थ की भावना , बेहतरीन नवगीत है।

पाँचवी रचना, खूबसूरत ग़ज़ल, बाँध कर रख रही है।

छठी रचना, अन्तस के कोने, बदलते हुए रिश्तों पर शानदार तंज है, दिलों में पहले जैसी मुहब्बत और याराना बाकी नहीं रह गया है। आदमी संबन्धों की परिभाषा भूल गया है, नफरत , ईर्ष्या, द्वेष ने पाँव पसार रखे हैं। बहुत सुन्दर अभिव्यक्ति है ।

एक संवेदनशील हृदय और भावुक मन की सारी रचनाएँ दिल को छू रही हैं। माँ सरस्वती का आशीर्वाद सदा बना रहे, आप निरंतर नई ऊंचाई छूएँ, मंगलकामनाएँ।

पिंकी परुथी "अनामिका"

6.

गीत, ग़ज़ल, छंदों की सरिता
बहकर आखर आखर बिखरे,
जितना बिखरे उतना चमके
नाम बढ़े, व्यक्तित्व भी निखरे,...

शुभकामनाओं एवं बधाई सहित

प्रीति सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com